

ॐ

समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

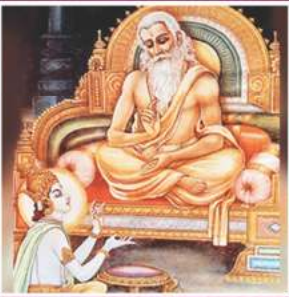
ॐ

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२३ ● वर्ष : २७ ● अंक : ०२ (निरंतर अंक : ३१४) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

व्रत, यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि सबसे श्रेष्ठ हैं सत्संग !

ब्रह्मज्ञान के सत्संग की बड़ी भारी महिमा है । तीर्थों को भी तीर्थत्व प्रदान करनेवाले ब्रह्मज्ञानी सद्गुरुओं का सत्संग-सान्निध्य करोड़ों तीर्थ करने से भी ज्यादा श्रेष्ठ है । पढ़ें पृष्ठ ८



महर्षि वसिष्ठजी
« द्वारा
श्रीरामजी को
ज्ञानोपदेश »



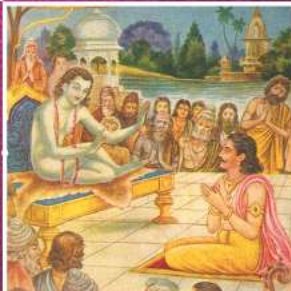
साईं श्री
लीलाशाहजी
महाराज द्वारा
पूज्य बापूजी को
ब्रह्मबोध »



मुनि अष्टावक्रजी
द्वारा »
राजा जनक
को आत्मोपदेश



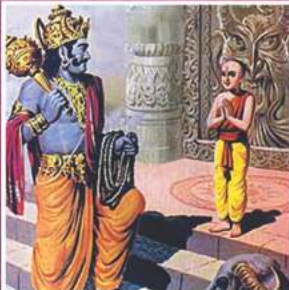
श्रीरामजी द्वारा »
हनुमानजी को उपदेश
.....
« यमराज द्वारा
नचिकेता को उपदेश »



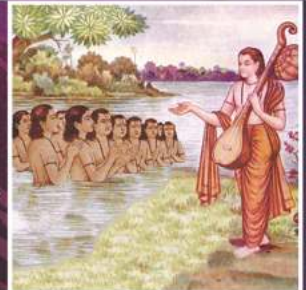
« मुनि
शुकदेवजी
द्वारा राजा
परीक्षित को
ज्ञानोपदेश »



जड़भरतजी द्वारा
« राजा रहूगण
को ब्रह्मज्ञान
का सत्संग »



देवर्षि नारदजी
द्वारा प्रचेताओं
को आत्मज्ञान
का उपदेश »



साधन की आदत डाल दो, रस आने लगेगा

१८

गणेश चतुर्थी

१९ सितम्बर

गणेशोत्सव का
कल्याणकारी संदेश

पढ़ें पृष्ठ ४

✍...भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन से कलंक लगता है । इस वर्ष १८ सितम्बर (चन्द्रास्त : रात्रि ८-४०) तथा १९ सितम्बर (चन्द्रास्त : रात्रि ९-१८) को चन्द्र-दर्शन निषिद्ध है ।

पढ़ें पृष्ठ ४



नियमनिष्ठा महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर

५



आप भी ले सकते हैं १७
सामूहिक श्राद्ध का लाभ

पारिवारिक सुख-शांति
व धन-लाभ हेतु १६

स्वास्थ्यप्रद व उत्तम
पथ्यकर तोरई १४



साधक का लक्ष्य क्या होना चाहिए ?

- पूज्य बापूजी

भगवान कहते हैं :

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः । मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत् मत्परः ॥

‘योगी को प्रशांतचित्त, निर्भय, ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित हो के और मन को संयत करके मेरे में ही चित्त लगाकर एवं मुझको ही अपना परम पुरुषार्थ समझते हुए योगयुक्त हो के बैठना चाहिए।’ (गीता : ६.१४)

तो साधक को सम्पूर्णतया प्रशांतचित्त होना चाहिए। वह निर्भय और गुरुसेवा आदि ब्रह्मचारी के व्रतों में स्थिर रहे, मन का निग्रह करे और मच्चित्त होने के लिए जो उपाय चाहिए वे उपाय करे। इससे साधक परमात्मा में मन स्थिर कर सकता है।

शांति तो थोड़ी देर के लिए मिल जाती है लेकिन यह प्रशांतात्मा है - ठीक से शांत... प्रशांत ! ‘भूख है, भोजन कर लिया, शांति हुई... अमुक वस्तु मिल गयी, शांति हुई... शरीर तंदुरुस्त है, कोई चिंता नहीं है, शांति है...।’ लेकिन यह शांति आने-जानेवाली है और परिस्थितियों के अधीन है किंतु जो भगवद्-तत्त्व को पा लेता है वह प्रशांतात्मा होता है, उसकी शांति परब्रह्म-परमात्मा के स्वरूप में स्थिति होने से होती है। और वैसी शांति एक बार मिल जाय घड़ीभर के लिए तो फिर बाहर की कोई भी वस्तु उसकी बराबरी नहीं कर सकती, वह प्रशांति बड़ी अद्भुत होती है। सारी कथाओं, क्रिया-कलापों, सारे धर्म, कर्म, ध्यान, जप, पूजा, सेवा का फल आत्मा के साक्षात्कार में है। आत्मसाक्षात्कार करना, प्रशांति पाना यह लक्ष्य होना चाहिए।

आत्मविश्रान्ति के लिए कई प्रकार की उपासनाएँ, साधनाएँ, सेवाएँ प्रचलित हैं। जितना साधन अंतरंग होता है उतना साध्य की प्राप्ति शीघ्र होती है और जितना साधक उच्च कोटि का होता है उतना ही उसे अंतरंग साधन का अधिकार प्राप्त हो जाता है। संसार का धन, वैभव एकत्र करके सुख लेने के पीछे जो लोग पड़े हैं उनका लक्ष्य बहिरंग जीवन है लेकिन साधक का लक्ष्य अंतरंग जीवन होता है। साधक की दृष्टि और भोगी की दृष्टि में फर्क होता है। अगर भोगी भी साधक की दृष्टि को पकड़ ले तो महान योगी हो जायेगा।

तो आप प्रशांतात्मा होने की कला सीख लो। रात को सोते समय आत्मा में विश्रान्ति पाओ। सुबह नींद में से उठकर भगवद्-सुमिरन करके चुप बैठो। इसको बोलते हैं ‘चुप साधन’। भगवान श्रीकृष्ण ने इस साधन की बड़ी भारी महिमा गायी है। भगवान कहते हैं :

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥

‘चित्त को आत्मा में स्थित करके किसीका भी चिंतन न करे।’ (गीता : ६.२५)

भगवद्-सत्ता में शांत होना बहुत ऊँची बात है। तो ज्यों-ज्यों आप प्रशांतात्मा होंगे त्यों-त्यों आपका जीवन सशक्त होगा, निखरेगा और आप सफलता के शिखरों पर पहुँच जायेंगे।

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा
न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥



लोक कल्याण सेतु

मासिक
प्रकाशन

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २७ अंक : २ (निरंतर अंक : ३१४)
प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक :

राकेशसिंह आर. चंदेल

प्रकाशन-स्थल :

संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत
श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
(गुजरात)

मुद्रण-स्थल :

हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर,
(हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री
आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू
आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

* Email: lokkalyansetu@ashram.org,
ashramindia@ashram.org
* Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष
मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम
अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक
कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

| भारत में : | | विदेशों में : | |
|-------------------|-------|------------------|-----------|
| (१) वार्षिक : | ₹ ४५ | (१) पंचवार्षिक : | US \$ ५० |
| (२) द्विवार्षिक : | ₹ ८० | (२) आजीवन : | US \$ १२५ |
| (३) पंचवार्षिक : | ₹ १९५ | | |
| (४) आजीवन : | ₹ ४७५ | | |

- भगवद्‌रस का पान कराके आबाद करनेवाला उत्सव.. ४
- गणेश चतुर्थी पर करणीय-अकरणीय..... ६
- नियमनिष्ठा..... ७
- आत्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है..... ९
- संसारी प्रेम का असली चेहरा..... १०
- व्रत, यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि सबसे श्रेष्ठ है सत्संग !... ११
- अपना दीया आप बनो..... १३
- गर्भवती महिला को सत्संग-श्रवण व
शास्त्र-अध्ययन आवश्यक क्यों ?..... १५
- पूज्य बापूजी के साथ आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी..... १६
- ऐसा त्याग 'त्याग' नहीं, आत्मवंचना है
- स्वामी अखंडानंदजी..... १७
- उन्हींको परमार्थ की प्राप्ति होती है
- संत निलोबाजी..... १९
- पारिवारिक सुख-शांति व धन-लाभ हेतु..... १९
- स्वास्थ्यप्रद व उत्तम पथ्यकर तोरई..... २०
- १०८ पाठ किये और बन गया काम
- विनीत कुमार..... २२
- साधन की आदत डाल दो, रस आने लगेगा..... २४

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *



रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे



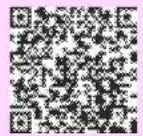
रोज रात्रि १०-०० बजे



Asharamji Babu



Asharamji Ashram



Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल

गणेश-चतुर्थी :
१९ सितम्बर



भगवद्‌रस का पान करके आबाद
करनेवाला उत्सव

गणेश-चतुर्थी

.....
- पूज्य बापूजी



ऐसे करें गणपतिजी की उपासना
गणानां पति इति गणपतिः । 'गण' माने
इन्द्रियाँ, जो इन्द्रियगणों का स्वामी है उस
अंतर्यामी विभु (परमात्मा) का वाचक है 'गणेश'
शब्द । गणेश चतुर्थी के निमित्त गणपतिजी का

पूजन किया जाता है । कर्म में अगर आश्रय ईश्वर
का, महत्त्व ईश्वर का और उद्देश्य ईश्वर का है तो
आपका कर्म कर्मयोग हो जायेगा । गणपतिजी की
मूर्ति तो भले बड़ी हो या छोटी हो परंतु उपासक की
भावना है कि 'ये भगवान हैं' तो भावना से

नियमनिष्ठा

- पूज्य बापूजी

(महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर)



एक बार महात्मा गांधी चरखा-दंगल देखने गये। चरखा-दंगल इतना अच्छा था, इतना जोरदार था कि महात्मा गांधी रात को १२ बजे के बाद लौटे वहाँ से। थके-थकाये थे तो चट्-से सो गये और पट्-से नींद आ गयी। डेढ़-दो बजे उनकी आँख खुल गयी, बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि 'हाय रे हाय ! मैं तो रोज रात को सोने के पहले भगवान के नाम का जप करता

था, प्रार्थना करता था, बाद में सोता था। आज मेरे से बड़ी भूल हो गयी। मैंने बड़ा अपराध किया, बड़ी भारी गलती की।' गांधीजी ने तो रात को २ बजे कुल्ला-वुल्ला करके भगवान की प्रार्थना चालू की। प्रार्थना करें और रोयें कि 'भगवान ! मुझे माफ करना...' फिर भगवान का ध्यान किया, जप किया फिर प्रार्थना की : 'हे भगवान ! मैं आपका हूँ। मेरे से

व्रत, यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि सबसे श्रेष्ठ है

सत्संग !

ब्रह्मज्ञान के सत्संग की बड़ी भारी महिमा है। तीर्थों को भी तीर्थत्व प्रदान करनेवाले ब्रह्मज्ञानी सद्गुरुओं का सत्संग-सान्निध्य करोड़ों तीर्थ करने से भी ज्यादा श्रेष्ठ है।

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।

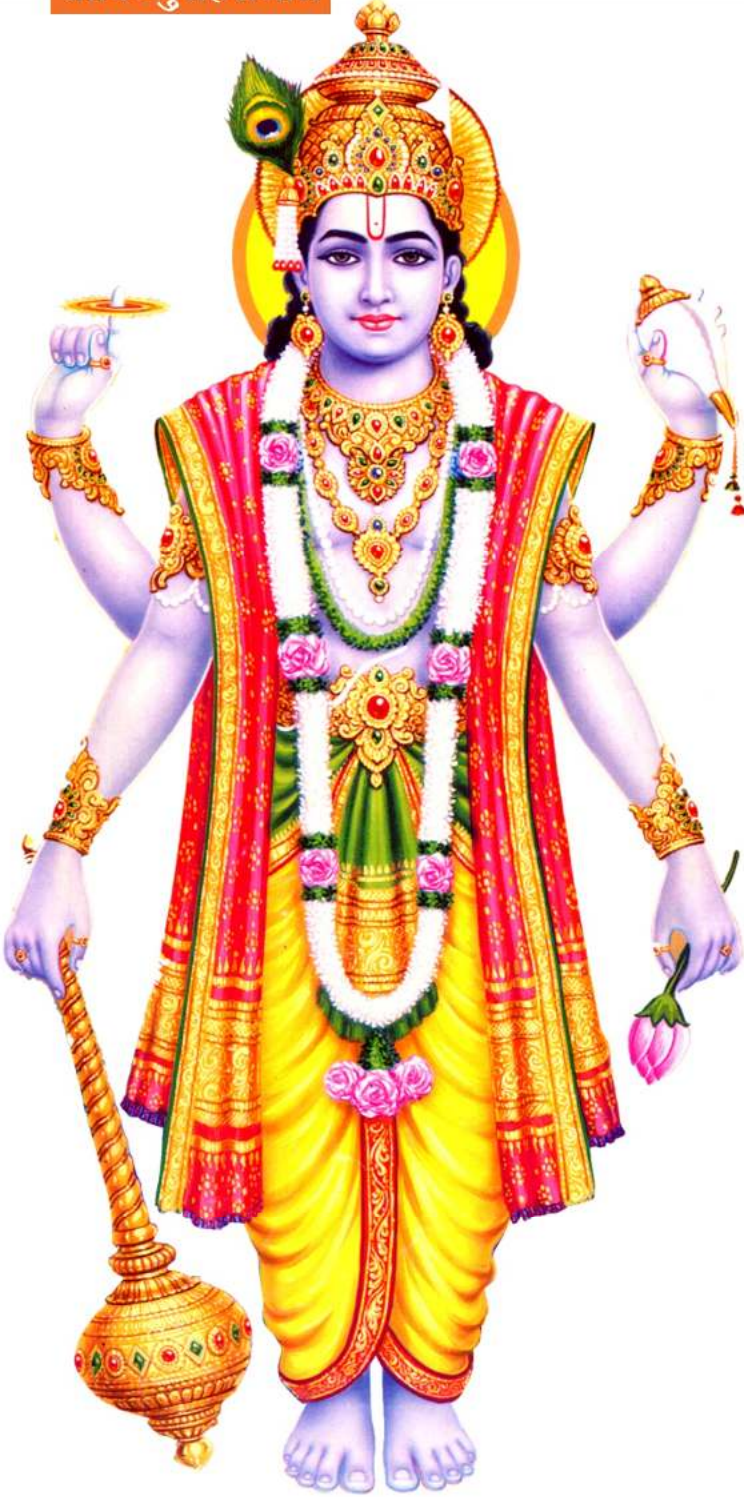
पापं तापं च दैन्यं च घ्नन्ति सन्तो महाशयाः ॥

गंगा पाप मिटाती है, चन्द्रमा ताप दूर करता है और कल्पवृक्ष दरिद्रता दूर करता है किंतु जो ब्रह्मवेत्ता संतपुरुष हैं उनके चरणों में श्रद्धा रखने से, उनके दर्शन एवं सत्संग से पाप, ताप और हृदय की दरिद्रता तीनों एक साथ दूर हो जाते हैं। इसीलिए संतों का संग करने को कहा गया है। संतों के चरणों में ज्ञान मिलता है और उनके सत्संग के श्रवण, मनन, निदिध्यासन से दिव्य आत्मज्ञान मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवत (११.१२.१-२) में उद्धवजी को सत्संग की महिमा बताते हुए कहा है :

न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म एव च ।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा ॥
व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमाः ।
यथावरुन्धे सत्संगः सर्वसंगापहो हि माम् ॥

‘प्रिय उद्धव ! जगत में जितनी आसक्तियाँ हैं उन्हें सत्संग नष्ट कर देता है। यही कारण है कि सत्संग जिस प्रकार मुझे वश में कर लेता है वैसा साधन न योग है, न सांख्य, न धर्मपालन और न स्वाध्याय। तपस्या, त्याग, इष्टापूर्त (कुआँ, तालाब खुदवाना, मंदिर बनवाना, बगीचा लगवाना आदि धर्म-कर्म) और दक्षिणा से भी मैं वैसा प्रसन्न नहीं होता। कहाँ तक कहूँ – व्रत, यज्ञ, वेद, तीर्थ और यम-नियम भी सत्संग





भगवान् भयकृत् हैं और

भयनाशन

.....भी.....

करनेवालों के लिए 'भय उत्पन्न करनेवाले' हैं तथा (२) भक्तों के लिए 'भय काटनेवाले' हैं। और ८३४वें नाम 'भयनाशनः' का अर्थ है - भगवान् अपने शासन के अनुरूप अर्थात् दैवी विधान के अनुसार आचरण करनेवालों के लिए 'भय नष्ट करनेवाले' हैं।

**भयभीत करके भी सुधारते हैं
भगवान्**

भगवान् की यह सृष्टि भगवन्मयी है। यहाँ अस्तित्व और चेतना होकर भगवान् ही सभीका अनुशासन करते हैं। जो भगवान् के अनुकूल वर्तन करते हैं और उन्हें चाहते हैं उनके हृदय में वे अपना भयनाशन रूप प्रकट करते हैं और धीरे-धीरे भय का मूल जो भेद-भ्रान्ति है उसका ही नाश कर देते हैं किन्तु जो उनकी प्रेरणा, आदेशों के विपरीत दुराचार में प्रवृत्त होते हैं, लूट-खसोट करते हैं, उनके हृदय में वे भयकृत् रूप से अवतरित हो के उन्हें सावधान करते हैं, सुधरने के कई अवसर देते हैं।

श्रीविष्णुसहस्रनाम शृंखला में इस बार प्रस्तुत है भगवन्नाम की एक जोड़ी - 'भयकृत् और भयनाशनः।' यह विलक्षण नाम-युग्म प्रेम और फटकार के दो विपरीत रूपों में हमें अपने से विमुख होने से बचाकर अज्ञान का नाश करके सम्पूर्ण भयों से छुड़ानेवाले भगवान् के स्वरूप को उजागर करता है।

८३३वाँ नाम 'भयकृत्' द्विअर्थी है - (१) भगवान् अपने शासन का अतिक्रमण

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि भय का जीवन में अपना महत्त्व है, उसका सर्वथा त्याग अपेक्षित नहीं है। जैसे अग्नि जलाती है लेकिन उसका भोजन पकाने में उपयोग है वैसे ही दोषों के परिपाक में, खतरों व दुष्प्रवृत्तियों से बचने में भय का उपयोग है। सद्गुरु, शास्त्र, भगवान् तथा श्रेष्ठ पुरुषों आदि के प्रति होनेवाला भय सात्त्विक भय है। जब मनुष्य इस सात्त्विक भय का त्याग कर



शरद ऋतु में विशेष सेवनीय स्वास्थ्यप्रद व उत्तम पथ्यकर

तोरई

हृदय को बल देनेवाली
एवं वीर्यवर्धक

पित्त-संबंधी समस्याओं में
विशेष लाभदायी



विटामिन 'बी-१ व 'सी', मैग्नेशियम, कैल्शियम,
फॉस्फोरस, जिंक, लौह, बीटा केरोटिन युक्त

रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने एवं
यकृत के कार्य को ठीक करने में लाभदायी

वर्षा ऋतु में संचित पित्त शरद ऋतु (२३ अगस्त से २३ अक्टूबर) में प्रकुपित होता है। इसलिए इस ऋतु में पित्तशामक पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

तोरई स्वादिष्ट, सुपाच्य, पित्तशामक, उत्तम पथ्यकर व औषधीय गुणों से युक्त सब्जी है। आयुर्वेद के अनुसार यह मधुर, स्निग्ध, शीतल, हृदय को बल देनेवाली एवं वीर्यवर्धक है। यह भूख व भोजन में रुचि बढ़ाती है, शारीरिक बल की वृद्धि करती है। पित्तनाशक होने से पेशाब में खून आना

एवं संक्रमण, बवासीर, पेट तथा शरीर में जलन, मुँह के छाले, नींद की कमी आदि पित्त-संबंधी समस्याओं में एवं पित्त प्रकृति के लोगों के लिए विशेष लाभदायी है।

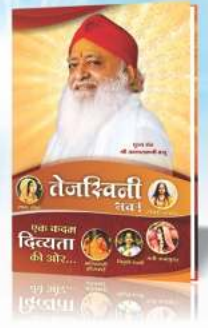
आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार तोरई में विटामिन 'बी-१ (thiamine)' व 'सी', मैग्नेशियम, कैल्शियम, फॉस्फोरस, जिंक, लौह, बीटा केरोटिन आदि पोषक तत्त्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

यह रक्त को शुद्ध करके त्वचा-रोगों को दूर करने में मदद करती है। खून की कमी दूर करने, आँखों की रोशनी व रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने एवं यकृत (liver) के कार्य को ठीक करने में भी यह लाभदायी है। रेशों (fibres) की प्रचुरता होने से यह वजन कम करने तथा हृदयरोग व मधुमेह (diabetes) में लाभदायी है। हफ्ते में २-३ बार तोरई का सेवन करने से कब्ज, कृमि आदि



आत्मसम्मान खोते नारी-वर्ग को
निज-गौरव में जगानेवाला उत्तम मार्गदर्शन

तेजस्विनी भव ! नया सत्साहित्य



इसमें आप पायेंगे : * कैसे छुएँ नारियाँ अपनी वास्तविक ऊँचाई को ? * चरित्रहीनता आदि
ज्वलंत समस्याओं का निवारण * वास्तविक सुंदरता प्राप्त करने की सफल कुंजी * कैसे करें
आदर्श चरित्र का निर्माण ? * भोगवादी कल्चर के शिकंजे से छूटकर कैसे चलें 'स्व' की ओर ? ₹ १०



श्राद्ध-महिमा

इसमें आप पायेंगे : * उत्तम संतति, सुख, समृद्धि व शांति की प्राप्ति में क्या योगदान है श्राद्ध का ? * श्राद्ध
क्यों जरूरी है ? * पितरों को तृप्त कैसे करें ? * श्राद्ध का माहात्म्य, शास्त्रीय विधि व प्रेरक कथाएँ ₹ ९

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

वायुनाशक श्रेष्ठ रसायन **हिंगादि हरड़ चूर्ण**

यह गैस, अम्लपित्त, कब्जियत, अफरा, सिरदर्द, अपच, अरुचि, मंदाग्नि एवं पेट के अन्य छोटे-
मोटे असंख्य रोगों के अलावा खाँसी, संधिवात, हृदयरोग, सर्दी, कफ तथा स्त्रियों के मासिक धर्म की
पीड़ा में लाभप्रद है।



₹ ६०
१०० ग्राम



श्रेष्ठ रसायन **आँवला पाउडर** बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

इसके नियमित सेवन से शरीर की कार्य-प्रणालियाँ उत्तम ढंग से कार्य करती हैं, जिससे शरीर पुष्ट
व बलवान बनता है। यह यौवन को स्थिर रखनेवाली, वीर्यवर्धक, नेत्रों के लिए हितकर, स्मृति-
बुद्धिवर्धक, त्वचा के रंग में निखार लानेवाली तथा हड्डियों, दाँतों व बालों को मजबूत बनानेवाली एवं
रोगप्रतिकारक शक्तिवर्धक महत्त्वपूर्ण औषधि है।

भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, खून की कमी, स्वप्नदोष तथा वीर्य-संबंधी रोगों में यह लाभप्रद है।

₹ ५०
२०० ग्राम

जोड़ों के दर्द की उत्तम दवा **संधिशूलहर**

इससे जोड़ों व कमर का दर्द ठीक होता है। हड्डियाँ व नसें मजबूत बनती हैं। यह गठिया,
मधुमेह (diabetes), गृध्रसी (sciatica) व मोटापे में भी लाभदायी है।



₹ ८०
१५० ग्राम

पौष्टिकता से भरपूर **द्राक्षावलेह**

शक्ति, चुस्ती व स्फूर्ति प्रदायक यह औषधि अरुचि, खून की कमी, शारीरिक कमजोरी एवं
अम्लपित्त (hyperacidity) में लाभदायी है। द्राक्षावलेहकृत (liver) के लिए लाभकारी है एवं
रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। यह पौष्टिक तत्वों से भरपूर है।



₹ २७०
५०० ग्राम

३०३ मालिश तेल

यह तेल घुटनों एवं जोड़ों
के सभी प्रकार के दर्द, पुरानी
चोट तथा अंदरूनी चोट में
आशातीत लाभ देता है।



₹ १२०
१०० मि.ली.

रूपेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए
अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर
में मोच आना आदि में हलके हाथ से
मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर
शीघ्र लाभ होता है।



₹ ५०
१०० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ
आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore"
App या विजिट करें : www.ashramstore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramstore.com



अमरनाथ यात्रियों व कावड़ियों में भंडारे व सत्साहित्य-वितरण

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between
18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month



विद्यालयों में हुआ सुसंस्कारप्रद नोटबुकों का निःशुल्क वितरण



योग व उच्च शिक्षा संस्कार कार्यक्रमों से उन्नत होते विद्यार्थी



मालाएँ व पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित प्रसाद पाते 'लोक कल्याण सेतु' के सेवाधारी



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरों नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :



स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी